JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

‘आनंद कभी मरते नही!’———

प्रा. सौ. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी—शिंदे
(M.A.Bed.M.Phil.Ph.D-Hindi)
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय पाचवड
ता. वाई, जिल्हा. सातारा. (महाराष्ट्र)
ईमेल आय.डी. vijayapinjari@gmail.com.
फोन. नं. 9881625879

“जिंदगी और मौत उपरावाले के हाथ में है जहांपनाह इसे ना तो आप बदल सकते है ना मैं, हम सब तो रंगमंच की कठपुतलियॉ है, जिनकी डोर उपरवाले के उंगलियों मे बंधी है कब, कौन, कैसे उठेगा, यह कोई नहीं बता सकता है”.....

‘आनंद’ फिल्म का यह सुपरस्टार। राजेश खन्ना द्वारा दोहराया डायलॉग कम—से—कम लब्जों में मौत का फलसफा सारे विश्व को समझा गया। अमृतसर मैं २९ डिसेंबर १९४२ को पैदा हुए राजेश खन्ना जिन्हें बचपन में ही काका ने गोद लिया था। इनका असली नाम जतीन खन्ना था। इनके काका ने प्यार से इनका नाम राजेश खन्ना रखा था। लेकिन प्यार से वह उन्हें काका नाम से ही बुलाते थे, क्योंकि पंजाब में अगर कोई छोटा बच्चा बेहद मासूम, प्यारा, सलोना लगने लगे तो लोग उन्हें प्यार से काका बुलाते है। राजेश खन्ना बचपन में बिल्कुल वैसे थे इसलिए उनके काका और संबंधी उन्हें प्यार से काका बुलाते थे। आगे उनसे प्यार करनेवाले भी उन्हें काका को जी जोडकर काकाजी कहने लगे।

बम्बई के सेंट सेबॅस्टियन गोन हायस्कूल में वह पढे आगे के.सी कॉलेज में उन्होंने उच्चशिक्षा हासील की। कॉलेज के दिनों में वह अक्सर नाटकों में हिस्सा लिया करते थे। यानी एक्टींग बचपन से ही उनके भितर थी। १९६५ में ऑल इंडिया टॅलेंट हंट में उन्होंने हिस्सा लिया। इस कम्पीटीशन में हजार प्रतीभागीयों में राजेश खन्ना को अभिनय के लिए चूना गया। १९६६ में ‘आखरीखत’ फिल्मद्ववारा सिनेजगत में उन्होंने अपना पहला कदम रखा। १९६७ में इस फिल्म को ४० वे ऑस्कर ॲकॅडमी ॲवॉर्ड में ‘बेस्ट फॉरेन लैंग्वेज’ के रूप में नवाजा गया।

हिंदी फिल्म जगत में राजेश खन्ना को सुपरस्टार राजेश खन्ना कहा जाने लगा। उन्होंने कुल ३७ फिल्मों मै काम किया। एक ‘ऑल राउन्डर हिरो’, अभिनय की खान, अभिनय, दिग्दर्शन, राजनेता, कलाकार,

सहकलाकार, एक अलग लव्हरबॉय, जिसकी नृत्यशैली, संवाद फेक, रहन—सहन, हावभाव, मिजाज, प्यार जताने कां ढंग, दोस्ती, सब अलग, सबसे अलग, रोमान्स सम्राट हिरो के चलते स्टार और स्टार के चलते सुपरस्टार कब बना पता ही नहीं चला। एक ऐसा सुपरस्टार जिसकी हर बात में एक नयापन था। जो ना उनसे पहले कभी था और ना ही होगा कई स्टार इस फिल्म जगत में आयेंगे भी और चले भी जायेंगे लेकिन हिंदी सिनेजगत में राजेश खन्ना का स्थान कोई अन्य अभिनेता नहीं ले सकता। उनके पहले भी हिंदी सिनेजगत में राजकपूर, देवआनंद, दिलीपकुमार जैसे स्टार हुए थे लेकिन जो दिलचस्पी लोगों की राजेश खन्ना में रही वह अन्य कलाकार में उतनी मात्रा में नहीं रही। कहा यह भी जाता है राजेश खन्ना उस जमाने के महिला दर्शकों में विशेष लोकप्रिय रहे है। उन्होंने हिंदी फिल्म अभिनेता के रूप में एक ऐसी उडान भर ली थी की लाखो युवा महिला वर्ग के दिलों की वह धडकन बन गये थे। सत्तर के दशक के सिल्वर ज्युबली हिरो राजेश खन्ना रहे है। दिल्ली में तो उनकी फिल्में देखकर कुछ लडकियॉ इतनी पागल हो गयी थी की अपने खून से उनका नाम लिखा करती थी। राजेश खन्ना के आते जाते गाडी को भी किस किया करती थी। उनकी सफेद गाडी पर कई लिफस्टीक के निशान नजर आते थे।

जिन ३७ फिल्मों में राजेश खन्ना ने काम किया उनमें कुछ फिल्में टॉप हुई तो, कुछ फिल्में फ्लॉप भी हुई। खासतौर पर शर्मिला टैगोर, आशा पारेख, मुमताज जिन फिल्मों में उनके साथ सहअभिनेत्रीयॉ थी वह उनकी फिल्में काफी लोकप्रिय रही है। हेमा मालिनी के साथ भी उनकी जोडी खूब जमी। जैसे—जैसे राजेश खन्ना हिंदी फिल्मों में अपना कदम आगे बडाते गये वैसे—वैसे उन्होंने आसमान की बुलंदियों को छुआ। कहा यह भी जाता है प्रत्यक्ष अप्रत्य रूप से राजेश खन्ना ने १२८ फिल्मों मे काम किया। जिस प्रकार वह लोकप्रिय होते गये वैसे—वैसे उनकी प्रेम कथाएँ लोगों के चर्चा का विषय बन गयी। १९७० के दशक में फॅशन डिझायनर अंजू महेंद्रु के राजेश खन्ना दिवाने हुए थे। सात साल तक उनके प्रेम का सिलसिला चलता रहा लेकिन अंजू की मॉ ने उनके इस रिश्तेको स्वीकार नहीं किया। राजेश खन्ना उसके साथ अपना घर बसाना चाहते थे लेकिन अंजू के परिवारवालों ने इस रिश्ते को ठुकरा दिया। राजेश खन्ना का घुस्सा आपे से बहार हो गया और उन्होंने गुमराह होकर गुस्से में डिंम्पल कपाडिया से १९७३ में अपनी शादी रचाली। डिंपल उस समय केवल १६ साल की थी। शादी करके अपनी बारात अंजू महेंद्र के द्वार से बडी धुमधाम से बेंड बाजे के साथ गुजर गयी। उन्हें दो कन्यारत्न प्राप्त हुए एक टिंवकल और दूसरी रिंकू खन्ना। कुछ दिन तक उनकी घर ग्रहस्थी अच्छी जमी लेकिन उनका पारिवारिक जीवन ज्यादा समय स्थीर नहीं रह सका। १९८४ में डिम्पल और राजेश खन्ना एकदूसरे से अलग हुए । डिंपल ने अपने आप को फिर अभिनय में लगा दिया। ८० के दशक में टिना मुनिम अभिनेत्रीने राजेश खन्ना के साथ शादी करने का प्रस्ताव रखा लेकिन राजेश खन्ना डिम्पल को तलाक देने की बात को राजी नहीं हुए । राजेश खन्ना का वह रिश्ता वही पर खत्म हुआ। फिर डिम्पल और राजेश खन्ना एक से रहने लगे।

१९६० से १९७० तक की राजेश खन्ना की काफी फिल्में लोकप्रिय रही। आखरी खत, राज, बहारों के सपने, अराधना, दो रास्ते, इत्तेफाक, डोली, बंधन, खामोशी, सच्चा झूटा, सफर, कटीपतंग, खामोशी इन फिल्मों में काम करते राजेश खन्ना ने सफलता के कदम इसकदर चूमें की वह काफी लोकप्रिय हुए । कहा जाता है जितनी सफलता के पादाने वह उपर चढे उतने ही वह निचे भी गिर गये। कुछ गलत बाते उनके जीवन में घटीत हो गयी। कुछ गलत लोग उनके जीवन में आ गये और वह बदनामी का शिकार बन गये उनके चमचों ने ही उनकी नीजी जीवन को हिलादिया और राजेश खन्ना को लोकप्रियता में मस्त रहते इस बात का पता भी नहीं चला। १९७१ से १९८० तक आनंद, हाथी मेरे साथी, दुश्मन, अमरप्रेम, बावर्ची, जोरू का गुलाम, नमक हराम, अविष्कार, आप की कसम, प्रेमनगर, रोटी, अजनबी, प्रेमकहानी, अनुरोध, अमरदीप, रेडरोज, बंदिश जैसी फिल्मों में उन्होंने काम किया। इनमें से कुछ फिल्में व्यवसाय का एक भाग बनकर रह गयी। कुछ फिल्मों ने राजेश खन्ना को काफी सफलता मिली। 'आनंद ' फिल्म के बाबुमोशाय यह शब्द जब कानोंपर पडते है तो तुरंत राजेश खन्ना ऑखों के सामने विराजमान हो जाते है। प्रेम, प्रशंसा, आशा—निराशा, अपेक्षा—उपेक्षा, सारे भाव राजेश खन्ना के अभिनय में देखने को मिलते है। आनंद फिल्म में आनंद यह शब्द सुनते ही राजेश खन्ना ऑखों के सामने मंडराने लगते। शायद ऐसा कोई दर्शक न हुआ होगा जो यह फिल्म देखकर रोया नहीं उसकी ऑखों से आसू नहीं आये। इस फिल्म ने और डायलॉग ने राजेश खन्ना को सुपरस्टार की माला पहना दी।

सत्तर के दशक में निर्माताओं का ताता 'आशिवार्द' बंगले पर लगा रहता। पत्रकारों की भीड लगी रहती उनके आजूबाजू। कहा यह भी जाता है। राजेश खन्ना कभी प्रसंशा के दिवाने नहीं हुए, नाही प्रसिध्दी के आदि हुए थे। नाही अपने बडप्पन को लेकर कभी बहके थे। धुंद थे।

हाजारों दिलों पर राज करनेवाला यह सुपरस्टार अपने नीजी जीवन में अधुरा—अधुरा सा था। तन्हा था। कभी—कभी इन्सान भीड के बीच भी अकेला होता है। राजेश खन्ना भी सुबह से लेकर शाम तक चाहनेवालों की भीड में ही होते थे लेकिन अकेले होते थे। अपने मन से। कुछ इसप्रकार जो चाहा वह मिला नहीं और जो मिला वह रास नहीं आया। चाहत, उल्फत, दौलत, शौहरत सब कुछ था उनके पास फिर भी न जाने एक अधुरापन उन्हें हमेशा जचता रहा खाता रहा। उस अधुरेपन की तलाश में वह हमेशा रहे लेकिन वह पुरी न हो सकी। काफी पार्टियॉ उनके घरों में उन दिनों हुआ करती थी काफी लोग खा—पिकर जाते थे। उनकी लोकप्रियता और लोकसंग्रह काफी था। उनके चाहनेवाले विदेश से उन्हें मिलने आते थे। खासतौर से आराधना, कटीपतंग, सफर, अमरप्रेम इन फिल्मों ने राजेश खन्ना के करियर को काफी उॅचा उठाया। खासतौर पर 'आराधना' फिल्म का वह गीत 'मेरे सपनों रानी कब आयेगी तु'। जिस गीत की चाहत आज भी लोगों के दिलों में कम नहीं।

राजेश खन्ना के फिल्मी सफलता की पहचान और एक बात में है। उनके फिल्म के गाने १) जिंदगी कैसी ऐ पहेली हाये। २) मैंने तेरे लिए ही सात रंग के सपने चुने। ३) बागों में बहार है, तो तुमको

मुझसे प्यार है। ४) रूप तेरा मस्ताना प्यार मेरा दिवाना। ५) जिंदगी एक सफर है सुहाना। ६) ऐ मेरे दिल के चैन। ७) गुलाबी ऑखे जो तेरी देखी। ८) कुछ तो लोग कहेंगे। ९) ए क्या हुआ। १०) मेरी प्यारी बहनियॉ। ११) फिजा के फूल पे आती कभी बहार नहीं। १२) छिप गये सारे नजारे। १३) नफरत की दूनियॉ को छोड के। १४) प्यार दिवाना होता है। १५) ऐ शाम मस्तानी। १६) ये लाल रंग कब मुझे छोडेगा। १७) ओ शाम कुछ अजिब थी। १८) कोरा कागज था ए मन मेरा। १९) यार हमारी बात सुनो। २०) यहा वहॉ सारे जहा में तेरा राज है। २१) कही दूर जब दिन ढल जाये। २२) अच्छा तो हम चलते है। २३) अगर तुम न होते। २४) दिवाना लेके आया है। २५) जीवन से भरी तेरी ऑखे। २५) दिए जलते है। २६) गोरे रंग पे न इतना। २७) करवटे बदलते रहे। २८) मैं शायर बदनाम। २९) मेरे दिल में आज क्या है। ३०) हम दोनों दो प्रेमी। ३१) शायद मेरी शादी का खयाल दिल में आया हैं।

यह सारे गाने सुपरहिट हुए है। इस सफलता का कारण है। किशोरकुमार की आवाज और आर.डी. बर्मन साहाब का संगीत राजेश खन्ना के गीतों की गायीकी की यह जोडी आजीवन बनी रही। उनके फिल्म का हर गीत किशोरकुमार सहाब ने गाया है और गीतों को संगीत आर.डी. बर्मन सहाब का ही है। किशोरदा एक अच्छे गायक तो थे ही लेकिन राजेश खन्ना के लोकप्रिय फिल्मों के कारण भी उन्हें काफी सफलता अपने निजी जीवन में मिली और वह भी लोकप्रिय रहे। राजेश खन्ना ने केवल फिल्मी पर्देपर ही अपना नाम रोशन नहीं किया बल्की तत्कालिन उनके मित्र राजीव गांधी के कहनेपर उन्होंने राजनिती में भाग लिया और वह तीन बार दिल्ली लोकसभा लडे भी। राष्ट्रीय नेता लालकृष्ण अडवानी के खिलाफ अभिनेता राजेश खन्ना। दिल्ली में यह चुनाव हमेशा यादगार रहा। अडवानी हार ने के डर से गुजरात में भी खडे हुए थे अडवानी १५८९ वोट से चूनाव जित गये यह बात अलग है लेकिन वह फिर कभी दिल्ली चूनाव लडने नहीं लौटे। उनके भीतर हमेशा दिल्ली चुनाव का डर बना रहा। राजेश खन्ना को दुसरी बार कॉग्रेंस से उम्मीदवारी मिली थी। दूसरी बार उन्होंने बी.जे.पी के शत्रुध्न सिन्हा को पराभूत किया। राजनिती में वह काफी समय सक्रिय भी रहे यह सोचकर की कॉग्रेस की तरफ से उन्हें राजसभा सदस्यत्व मिल जाएगा क्योंकि उनके बारे समाज और कॉग्रेस पार्टी में माहोल भी वैसे बना था। दुर्भाग्य से ऐंसा हुआ नहीं। पार्टी ने उन्हें अनदेखा किया इस राजनीति में अपना सिक्का आजमाने गये। राजेश खन्ना बादमे १९९१ से २०१२ तक राजनिति में सक्रिय रहे। राजेश खन्ना अपने आप पिछे पड गये। हिंदी फिल्मजगत में तब तक कई नये कलाकारों ने अपना नसिब आजमाया। इसके चलते राजेश खन्ना काफी पिछे रह गये।

फिर फिल्म इन्डस्ट्री की और मुडे राजेश खन्ना ने हिंदी फिल्मों में काम करना शुरू किया। उस वक्त उन्होंने आ अब लौट चले,। प्यार जिंदगी है,। क्या दिल ने कहा,। जाना लेटसृ फॉल इन लव,। वफा अ डेडली लव्ह स्टोरी,। दो दिलों के खेल में,। किस काम के यह रिश्ते,। खुदाई जैसी फिल्मों में काम किया। उन्होंने बादमें अपनी पत्नी डिंपल को फिल्म की नायिका बनाकर एक फिल्म निर्देशन करने की भी कोशिश

की फिल्म थी जय शिव शंकर। इन दिनों पती—पत्नी एक दुसरे के करीब थे दुर्भाग्य वश यह फिल्म पूरी नहीं हो पायी।

राजेश खन्ना को उन्होंने हिंदी फिल्म जगत को दिये गये योगदान के कारण निम्न पुरस्कार एवं सन्मान देकर गौरवान्वीत किया गया।

- ❖ १९७१ फिल्म फेअर ॲवार्ड — सच्चा झूठा (बेस्ट ॲक्टर)
- ❖ १९७२ फिल्म फेअर ॲवार्ड — आनंद (बेस्ट ॲक्टर)
- ❖ १९७३ फिल्म फेअर ॲवार्ड — अनुराग (बेस्ट गेस्ट ॲक्टर)
- ❖ १९७४ फिल्म फेअर ॲवार्ड — अविष्कार (बेस्ट ॲक्टर)
- ❖ १९९१ फिल्म फेअर ॲवार्ड — पुरस्कार—हिंदी फिल्म इंडस्ट्रीमें २५ वर्षे सक्सेसफूल योगदान के लिए।
- ❖ १९९५ कलारत्न ॲवार्ड
- ❖ २००५ लाईफ टाईम अचिव्हेमेंट ॲवॉर्ड

कहा जाता है १९७०—७९ के समय हिंदी फिल्म जगत में राजेश खन्ना सबसे ज्यादा रूपये लेकर फिल्म साईन करनेवाले कलाकार थे। बाद में यह स्थान अमिताभ बच्चन सहाब ने लिया। आगे १९८० से १९८७ तक दोनों का फिल्में साईन करने का रेट सेम था। बाद में राजेश खन्ना निचे उतर आये। वह काफी निचे उतर आये मुमताज के साथ उन्होंने कुल ८ फिल्में की वह ८ फिल्में सुपरहीट हुई। 'आराधना' फिल्म रिलीज होने से पहले राजेश खन्ना एक फालतू हिरो थे। 'आराधना' फिल्म ने उन्हें पहली बार सुपर स्टार बना दिया।

जिस तरह राजेश खन्ना की फिल्में और गीत मशहूर हुए उसीप्रकार उनके फिल्म के डायलॉग भी काफी लोकप्रिय हुए। वह डायलॉग केवल फिल्मों के तौरपर मशहूर नहीं हुए बल्की उनकी अपनी जिंदगी में भी उनके साथ उतने ही जूड गये। एक लोकप्रिय कलाकार के रूप में राजेश खन्ना को चाहनेवाले दर्शक आज भी इन डायलॉग के दृष्टीकोन से ही अपने प्रिय अभिनेता को याद करते है। मानो उनके डायलॉग आज भी उनसे जूदा नहीं हुए ।

- ➢ मेरे फॅन्स कभी मुझसे जूदा नहीं होंगे ——— बाबू मोशाय। — आनंद
- ➢ आय हेट टिचर्स, लो फिर तुम्हारे ऑखों में पानी। — अमरप्रेम
- ➢ उपर जाके उपरवालें से कहूँगा, इन्सान को पेट मत दे पेट दिया तो उसकी भूख मत दे और भूक दी तो उसके रोटी का इन्तजाम कर। — रोटी
- ➢ खूश रहना एक सिधीसाधी बात है लेकिन सिधासाधा रहना बहोत मुश्कील है, किसी बडी खुशी के इंतजार में हम छोटे—छोटे खुशी के मौके भूल जाते है। — बावर्ची

- मैं मरने से पहले नहीं मरना चाहता, अगर जिंदगी एक दिया है तो उसका तेल बहोत तेजीसे जल रहा है। मैं इस दिये की उम्र बडाने के लिए उसकी रोशनी कम नहीं कर सकता। ये तो मैं ही जानता हुँ कि जिंदगी के आखरी पडाव पर कितना अन्धेरा है। — सफर (यह डायलॉग उनकी मौत से वैसे ही ताल्लुक रख गये।)
- कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहेना। — अमरप्रेम
- इज्जतें, शोहरतें, चाहतें, उल्फतें, कोई भी चीज दुनिया में रहती नही। आज मैं हूँ जहॉ कल कोई और था। ए भी एक दौर है, वो भी एक दौर था। — दाग
- जिंदगी बडी होनी चाहिए। लंबी नहीं। — आनंद
- जब तक जिंदा हूँ तब तक मरा नहीं, जब मर गया साला मैं ही नहीं। — आनंद
- जिंदगी और मौत उपरवाले के हाथ में हैं। उसे ना तो आप बदल सकते है ना मै। — आनंद
- मैं देर से नहीं आता लेकिन क्या करूँ देर हो जाती है। — रायबलराम
- एक छोटासा जख्म बहुत गहरा दाग बन सकता है। — आराधना
- सेठ जिसे तुम खरीदने चले हो उसके चेहरे पर लिखा है नॉट फॉर सेल — अवतार

कई डायलॉग राजेश खन्ना के अपने निजी जीवन से काफी मिलते जुलतेथे। कभी — कभी तो लगता है यह उनके डायलॉग नहीं अपनी निजी जिंदगी वह बता रहे हैं।

राजेश खन्ना अपने जमाने में काफी लोकप्रिय रहे लेकिन कामयाबी और शोहरत के दायरे से उन्होंने अपने आप को कभी कामयाबी का शहेंशाह नहीं समझा कामयाबी की कोई हवा उनपर जादू नहीं कर सकी। काफी लोकसंग्रह उनका रहा काफी फैन्स रहें।

किसी भी सुपरस्टार का अपना निजीजीवन हमेशा आम लोगों की चर्चा का विषय कुतूहल का विषय बन जाता है। राजेश खन्ना अपने निजी जीवन में काफी अकेले, अधुरे, बेफीक्र, लापरवाह से हो गये। अपने निजी प्यार में धोका खाया । अपनी पत्नी डिपंल से अलग होना। अपनी फिल्मों के अंदाज गलत साबीत होना। उनके अपने लोगों द्वारा, चमचों द्वारा उनसे लापरवाह जैसा सलूक करना। राजनिती से वापस लौटनेपर मेहबूबा, हमशक्ल, स्कूलमास्टर यह उनकी फिल्में फलॉप हो गई। उनदिनों सिर्फ सौतन और अवतार इन दो फिल्मों ने राजेश खन्ना की नैया स्थीर की। चंदेरी दुनिया में अपना तामझाम आजमानेवाले नायक का पारिवारिक जीवन हमेशा अस्थीर, टूटा और बिखरा और फिर टूटकर समेटा रहा। उसमें इन्कमटैक्स की रेड में राजेश खन्ना को अपना अशिर्वाद बंगला भी गिरवी रखना पडा और वह अपने ऑफिस में रहने लगे। ऐसा भी कहा जाता है। उनदिनों उनके घर एक भी नोकर नहीं था। वह अपने सारे काम खुद किया करते थे। अपने निजी दु:ख और संघर्ष में भी उन्होंने लोगों को हसना सिखाया प्रेम, विरह, दु:ख, निराशा, संघर्ष, त्याग, संवेदना उनके निजी जीवन में हमेशा समायी रही।

शोहरत की बुलंदियों को छुनेवाले इस कलाकार ने किसी साधारण व्यक्ति की तरह दुःख को खुद सहा। अपने निजी मेहनत से वे जितने उपर उढे थे। फिल्म इन्डस्ट्री में जीस बुलंदी को उन्होंने छुआ था। वहॉ से उतेनीही गती से वह निचे उतर आये। किसी ने ठिक कहा है बढता सूरज धिरे—धिरे ढलता ही जाता है।

इस महान हस्ती ने १८ जुलै २०१२ को इस संसार को अलविदा कहा। अचरज की बात यह है। नियती का शो देखो कैसे होता है। 'आनंद', 'खामोशी', 'सफर' इन तीनों फिल्मों में राजेश खन्ना कॅन्सर से पीढीत दिखाये गये है। अपने निजी जीवन में यह अभिनेता कॅन्सर जैसे बिमारी से झूँजते झूँजते चल बसा। उनकी देह चली गयी क्योंकि 'आनंद कभी मरा नहीं करते'। उन्होंने कहा था 'मौत तु एक कविता है' मुझसे एक कविता का वादा है, मिलेगी मुझको यह संदेश देकर उन्होंने अपने निजी जीवन में मौत का हस्ते हस्ते स्वागत किया मौत के बाद उनकी देहबोली दर्शकों को यही संदेश दे गई।

राजेश खन्ना जैसे सुपरस्टार जिस्म के तौरपर हमसे बिछड गये। लेकिन हजारों चाहनेवालों के दिलों पर वह हमेशा राज करते रहेगें क्योंकि वह कहा करते थे। 'मेरे फॅन्स कभी मुझसे जूदा नहीं होंगे'। यह कलाकार अपने चाहनेवालों से इसप्रकार जूडा है के चाहनेवाले राजेश खन्ना के बारे में हमेशा यही कहेंगे 'आनंद कभी मरा नहीं करते'। इस महान सुपरस्टार को मेरा शतश प्रणाम।

संदर्भ —

१) राजेश खन्ना — एक था सितारा — गौतम चिंतामणी — हार्पर कॉलिन्स प्रकाशन २०१४

२) डार्क स्टार : राजेश खन्ना होनेवाली तन्हाई — प्राक्कथन — शर्मीला टागोर
ले. गौतम चिंतामणी २०१५ हार्पर कॅलिन्स फिलपकार्ड, रेडिफ बुक्स

३) कुछ तो लोग कहेंगे — राजेश खन्ना — यासर उस्मान — पोंग्वीन यूके ३/९/२०१४

4) Flash News Today Online New's Magazine-Rajesh Dimple 31/12/2010

5) Iconic hero Rajesh Khanna, turn's 69 and died on 18/7/2012

६) प्रतियोगिता दर्पन अगस्त २००९ पृ.२२ अभिगमन तिथी १६ जुलाई २०१०

७) पुण्यतिथी विशेष : देश के पहले सुपरस्टार थे राजेश खन्ना पत्रिका मूल से २८/७/१४

8) Rajesh Khanna's life in pics-NDTV movie's cam 29 से पुर्नलिखित ९/१/२०१२